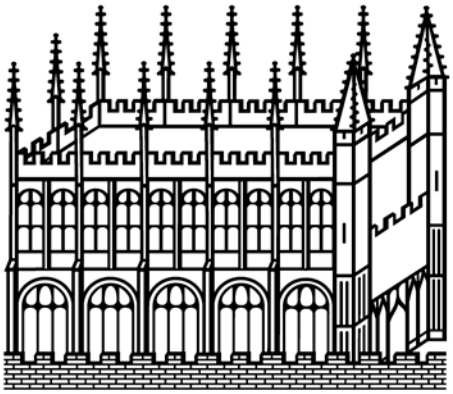

Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13. D. 24 Hindi Mann. 1

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.

Presented

by

Munshi Newul Kishore.

Guru upadēśa katha.

Gur Oopkar Katha

गुरुउपकार कथा

और

भजन विनय प्रकाश

گرواوپکار کتھا و بھجن بنے پرکاش

प्रथम में शिष्य के उपकार से गुरु को पर ब्रह्म सच्चिदानन्द रूप

हरि का दर्शन हुआ

और

द्वितीय में श्री विष्णु, शंकर आदि देवताओं की भजनावली है

परम प्रेमी भक्त मुंशी मुन्नालाल साहब की बनाई हुई॥

पहिलीवार

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापखाने में छापीगई॥

अक्टूबर सन् १८८० ई०

॥श्री गणेशाय नमः॥

अथ कथा गुरु उपकार लिख्यते

चौपाई

श्री गुर चरण कमल उर राखी। सुमिर गजानन हरि गुण भाखी
करब कथा मंगल सुख करणी। शमन सकल दारिद दुख हरणी
जो विश्वास होय मन माहीं। सो जानब कछु दुर्लभ नाहीं
विदित वेद इतिहास पुराना। अमरादिक सब करत बखाना
आरति हरण शरण भगवाना। प्रणत पाल प्रभु कृपा निधाना
करे गान हरिगुण चित लाई। काम क्रोध मद लोभ बिहाई।
यह भवसिन्धु अगम अवगाहा। बिन प्रयास नर पावें थाहा
भव रुज निकट न आवे ताके। मन क्रम बचन प्रीत दृढ़ जाके
होय प्रतीत प्रीत यह भांती। जिम चातृक तृषित जल स्वाती
दो० मनके जीते जीत है। मनके हारे हार + ।
मन प्रतीत ते पाइये। पार ब्रह्म करतार ।
सो० कहौं एक इतिहास। हरि के चरित शुभ गायके
होय हृदय विश्वास। सुनत श्रवण पावन सुखद

हतो एक नर उदर अहारी । विना अशन जग फिरत भुखारी
बीते बहुत दिवस एही भांती । निशि दिन दहत अन्न विन छाती
देख एकदिन सन्त समाजू । शिखन सहित राजत गुर राजू
विंजन विविध भांत शिखलावें। गुरू सहित नित भोग लगावें
तिन्हें देखि मन दुखी विचारा। करों यहां आपन गुरू द्वारा ॥
जो पै शिष इन को मैं होइहों । नित भोजन भर उदर तो रैहों
निकट जाय तब कहा भुखारी । करो शिष्य गुर शरण तुम्हारी ।
गुरू अनुमान कीन्ह मन माहीं। लैहै मांगि भोजन हम पाहीं ।
दे गुरु मंत्र शिष्य तेहि कीन्हा। दिना चार लों भोजन दीन्हा ।
दो॰ गुर अनुमान कीन्ह मन नव शिष कछु नहिं देइ
है यह पेट अहारी । उलटे भोजन लेइ ।
सो॰ तब गुरु रचेउ उपाय । नव शिष को लै साथ में
करिये बास वन जाय । देखिय यहि की धीरता ।
कीन्ह पयान त्वरित गुरु नाथा । गयो विपिन नव शिष लै साथा
मानुष तनकी कौन चलावै । पशु पक्षी कोउ दृष्ट न आवै ।
तहां जाय गुरु कीन्ह बसेरा । बिस्मै युत तब बोलेउ चेरा ।
इहां वास करिवो भल नाहीं । को देहै भोजन यहि ठाहीं ।
गुरु हंसि कहेउ कि रघुबर देहै । भई प्रतीत शिष्य कोउ होइहै
बीत्यो दिवस भयो अंधियारा। मिलेउ न तादिन ताहि अहारा
दिवस अन्त अतिशय भयो भूखा। कलन परत क्षण पल मुख सूखा
बोला शिष्य सुनो गुरु स्वामी। कहं रघुबर तुम्हरे अनुगामी ।
भयो अबेर अबहुं नहिं आवा । की सुधि तुम्हरि नाथ नहिं पावा
दो॰ अज्ञा होय जो नाथ की। इत उत देखों जाय ॥

की मारग मा आवही । की कहुं गयो भुलाय
सो॰ गुरु अनुशासन पाय । चलेउ त्वरित मारगलखत
कछुक दूर लौं जाय । नव टेरेउ यहिं भांत सों
हो कहुं हो तुम रघुबर भाई । केहि कारण बहु बेर लगाई
आवो सपदि करो जन देरी । गुरु तुम्हार तुम्हरे अवसेरी ।
देव अशन गुरु भोग लगावें । सो प्रसाद पुनि हम हूं पावें
जब रघुबर कहि टेर लगाई । विश्व भरण सन्तन सुखदाई
सुनत टेर प्रभु दीन दयाला । मनुज रूप प्रगटे ततकाला
विंजन विविध भांत नहिं दीन्हा । पुनि पाछे ते विनै बहु कीन्हा
मैं तो ग्रसित रहत भवबाधा । ताते क्षमो मोर अपराधा ।
तात काल्ह एहि विरियां आयो । पुन हम सों भोजन लै जायो
लै भोजन शिख गुरु पहं गयऊ । बचन विनीत कहत अस भयऊ
दो॰ नाथ पदारथ पाइये । ठाकुर भोग लगाय ।
रघुबर दीन्हों लायकै । बहु विध विनय सुनाय
सो॰ हौं गिरसित भव जाल । तात गई सुधि भूल मोहिं
यहि विरियां पुन काल । आइकै भोजन लीजियै
गुरु अभिमान कीन्ह मन माहीं । बिना बिचार खाब भल नाहीं
नहिं जानों धों कासों पायो । की घर घर ते मांग कै लायो
जूंठ अजूंठ कहां ते आने ॰ । उचित नहीं भोजन बिन जाने
बोले तब गुरु करि मन रूखे । खाउ जाय तुम हम नहिं भूखे
तब तब शिष हरि भोग लगायो । प्रभु प्रसाद पुनि आपुन पायो ।
भयो भोर विरियां जब आई । गयो शिष्य जहं मिले रघुराई ।
जेहि प्रकार से प्रथमहि पायो । लैकै रित वास तहं आयो ॰

खायौ ठाकुर भोग लगाई । जो बचि रह्यौ सो धरेउ उठाई ।
होत भोर शिष गयो अस्नाना । कीन्ह गुरू तब मन अनुमाना
दो॰ देखौं तौ मैं खोलिकै । व्यञ्जन केहि प्रकार ।
हौं भूखो दिन तीन को । खाउं कौर दुइ चार ।
सो॰ आवत बास सुहाय । देखेउ ताको खोलिकै
मन आयौ ललचाय । भूल्यौ उचित विचार सब ।
कछुक भोग लै गुरू तब खायौ । ऐसो स्वाद कबहुं नहिं पायौ ।
गुरू कीन्ह मन बहुत विचारा । कैसो है वह निपुण सुआरा
जो यह व्यंजन देत अनूपा । देखौं मोंहु ताको रूपा +
आयो बहुरि शिष कर अस्नाना । बोल्यौ गुरू तब वचन प्रमाना
कहियो रघुवर सों तुम जाई । हमका तुम कब मिलिहौ आई
गयो शिष्य पुन रघुवर पासा । कहा संदेश जो गुरुमन आसा
बोले हंसके तब रघुराई + । मिलब हमार कठिन सुनु भाई
जब फूटैं लौका चवरासी । पुजिहै आस जो गुरुमन भांसी
सुनत शिष्य उठि तुरत उत धायो । खोज पचासी लौका लायो ।
दो॰ फोरि लौका लायकै । रघुवर मन सुख पाय ।
कहा तुम्हारो सब भयो । चलौ मिलौ अब भाय ।
सो॰ रह्यौ तुम्हार जो टेक । सो सबतो पूरण भयो
तापै लौका एक । फोरयो सरिस तुम वचनतै
जो रघुवर अब चलिहौ नाहीं । तौ तोरब तुम शिर यही ठाहीं ।
सुनि प्रिय वचन कठोर कराला । चले त्वरित संग दीन दयाला ।
पलट रूप श्रीपति भगवाना । विश्व विमोहन कृपा निधाना
श्याम गात पीतांबर काछे । क्रीट मुकट सजन शिर आछे ।

भाल बिशाल तिलक गोरोचन । भृकुटी कुटिल कंजारुण लोचन
श्रवण कुंडल जिम आकृत मीना। सार भाग जनु रवि हर लीना।
करिनिन्दक सुन्दर भुज चारी । शान्त कुम्भ मणि भूषण धारी
कंबु कराठ गल माल बिराजै । भृगुलता शुभ वत्सल छाजै ।
नाभि गंभीर भंवर जनु सरिता । उदर रेख देखत मन हरिता ।
दो॰ कटि पट पीत बसन दुति मानहु अपित प्रभान ।
जानु जंघ त्रिभंग शुभ शोभा वरणि न जान ।
सो॰ धारे चारों पाण + पद्म चक्र शंख औ गदा ।
बसत जे उर यह ध्यान धन्य भाग धनि " सुखद
छं॰ यह ध्यान पद निर्बाण दायक जे सुजन नित ध्याइहैं
संसार सिंधु अपार बिन श्रम पार ते नर पाइहैं
चरित शुभ कीरत ललित मन कर्म वच उर ल्याइहैं
बिन जोग जप तप दान मख व्रत नियम सुरपुर जाइहैं
विश्वास कर हरि आस उर धरि यह चरित जे गावहीं
लाल मनी सुख संपदा जग सर्वदा ते पावहीं ।
दो॰ अंग अंग आभूषण लाजत कोटि अनंग ।
रूप राशि करुणा यतन पहुंचे जाय शिष संग
दौरि शिष्य आगे गयो कहेउ सुनो गुरु नाथ
रघुबर आये मिलन को तुमहूं होउ सनाथ
सो॰ सुनि सेवक के बैन मगन प्रेम गुरु ध्यान धरि
पुलकि गात जल नैन उठे मिलन श्री नाथ को
धाय धरेउ प्रभु पद जलजाना। सुख आनन्द नहिं हृदय समाना
त्राहि त्राहि वत्सल भगवाना । परेउ धरणि तल लकुट समाना

कारणि समुरू निज मनहि लजाई। प्रभु उठाय उर लीन्ह लगाई
कहि प्रिय बचन गुरुहि सनमानी। करो नात जनि मनहि गलानि
मांगो वर जो रुच मन मांहीं। देन तुम्हे मोहि दुर्लभ नाहीं।
तब गुरू उठ बोले कर जोरी। आशा नाथ सुनु विनती मोरी
वर काको कहियत नहिं जाना। मैं मति मन्द मूढ़ अज्ञाना।
जो तुम्हरे मनकी रुच होई। दीना नाथ देव वर सोई +
और विनय का करों मैं स्वामी। सम दर्शी तुम अन्तर्यामी।

दो॰ भक्त आपनी देइ प्रभु बोले गिरा प्रमान +
धन्य सुकृत तुम शिष्य की हमें मिलायो आन

सो॰ बोले गुरू सुनु नाथ। प्रथम बचन शिख पालिये
करिये मोहि सनाथ। निज जन आपन जानिके

एव मस्तु कह्यो कृपा निधाना। गुर उर सुख नहिं जाय बखाना
तेहि पाछे सेवक अनुरागा। दंडप्रणाम करण प्रभु लागा
बोल्यो बचन सहित सकुचाई। नाथ कीन्ह मैं बहुत ढिठाई।
मैं अज्ञान तुम्हें नहिं जाना। छिमो अपराध मोर भगवाना
कह्यो कटु बचन तुम्हें मैं स्वामी। छिमो सो अवगुण अंतर्यामी
भाय भाव प्रभु तुम्हें मैं जाना। त्रिभुवन नाथ नहीं पहिचाना
छिमो चूक अनजानत केरी। पाहि पाहि शरणागत तेरी।
सुनि शिष बचन कह्यो सुखदाना। प्रिय अतिशय मोहि तुम सम
जो गुरु हेतु कह्यो कटुबानी। सो तो मोहिं बहु अधिक सुहा

दोहा

दो॰ सुनो तात तुम प्राणप्रिय जनि मानो जिया ऊन
तुम सम भक्त निकायजे मोहिं प्राणन ते दून।

सो॰ देइ भक्ती बरदान ✦ बिदा मांगि करुणा अयन
भये प्रभु अंतर ध्यान करि संतोष गुरु शिष्य को
गुरु उपकार कथा सुख खानी। भक्त मूल शुभ स्वर्ग नसेनी
गुण न अलंकृत सब बिध हीना। नहिं शुभ शब्द न अर्थ नवीना।
केवल हरि चरित्र गुण गाई ।लालमनी निज बिनय सुनाई
प्रेम भीन सों प्रभुहि रिझाई ।जाते अन्त मोर बनिजाई ✦
हों यद्यपि मैं अतिशय कोही। विप्र साधु गुरु साहेब द्रोही
तदपि प्रभू को मोंहि भरोसा ।करिहैं कृपा मोपर तजि रोसा।
अजय अनादि अलख अविनाशी। कृपा सिंधु सब उर पुर बासी
करिहैं क्षमा सब औगुण मोरे। नहिं धरिहैं चित सपन्यों भोरे
शरणागति अघ ओघ निवारण। प्रणत पाल प्रभु अधम उधारण

दोहा

त्राहि त्राहि रघुवंशमणि कृपा सिंधु रघुनाथ।
करो कृपा करुणायतन मोहिं जन जानि अनाथ

सोरठा

होय सिद्ध सब काम कहिहैं जे प्रेम लगायके
तिन्हैं करों परणाम बार बार शिर नायके ॥

इति गुरोपकार समाप्तम्

श्रीगणेशायनमः

अथ भजनविनयप्रकाश

लिख्यते

जय गणपति गिरधी पति वारे। सुख प्रद विघ्न विनाशन हारे।
वक्र तुंड इक दन्त गजानन ।भुजा चार लोचन रतनारे १
भाल विशाल महा छवि सुन्दर। अरुण पराग तिलक शुभ सारे २
विघ्न राज महाराज दया निध ।सिद्धि सदन मूषक असवारे ३
गणनायक मम को वरदायक। कर सरोज मुद मोदक धारे ४
जाको नाम ततक मुख निकसत। विनशत कोटि जन्म अघ भारे ५
दीन दयाल लाल शंकर को ✢ ।असुरन काल विबुध हितकारे ६
लाल मनी पर कृपा करो प्रभु ।वसो हृदय सित कंठ दुलारे ७

२ भजु मन गिरजा पति अविनाशी

ध्यावत ध्यानी वेद पुराणी ।मुनि विज्ञानी सुर सन्यासी १
वाहन वरदा है विपरदा ✢ ।मुक्त गदा लिये कर कैलाशी २
भूतन संगी है बहुरंगी ✢ ।गणगनप्रसंगी धाम वरुणासी ३
खाये भंग है जटन गंग है ✢ ।उमा संग अणिमादिक दासी ४

मुण्डन माला गले शिर काला । शशि भाला राजन सुख राशी ५
संशय नाशी सदा उदासी । भक्त विलासी मुक्त प्रकाशी ६
दीन दयाला प्रणत पाला । + । लाल मनी भजु शिव अविनाशी ७

३ आरतिहरणी शंभु निर्वाणी

प्रणत पाल संकट भव मोचन । भाल विशाल सुभग शशि रोचन
व्याल कपाल माल त्रयलोचन । वामे अंग अरधंग भवानी १
जटा मुकुट राजत शिर गंगा । भस्म विभूत लगाये अंगा
पिये भंग खप्पर भर रंगा + । छवि नहिं जात बखानी २
कर त्रिशूल तन केहर छाला । वृष वाहन बांधे गो शाला
भूत पिशाच संग मतवाला । जिनकी अद्भुत बाणी ३
द्रवत दीनपर जो बिन सेवा । नहिं पावत जाको सुर भेवा
भोला नाथ सदा सुख देवा । अस हर अवढर दानी ४
लाल मनी मांगत करजोरे । पुरवो नाथ मनोरथ मोरे
दीजे यह वरदान निहोरे । राम भक्त सुख खानी ५

४ है शिव नाम राम जग सारा

चन्द्र लिलाट बाघंबर ओढ़े । पिये भंग मतवारा +
अरुण नयन पीतांबर काछे । केशर तिलक लिलारा १
कर त्रिशूल गले मुंडन माला । प्रबल बैल असवारा +
वाहन गरुड शर चाप धरे कर । उर वैजन्ती हारा + २
शीश गंग शिर जटा रखाये । तन विभूत की छारा +
कीट मुकुट कटि कछनी काछे । शोभित कच घुंघवारा ३
का बरणौं छवि हरनर हरिकी । साहेब दोउ उदारा +
लाल मनी भजु शिव नारायण । जीवन मुक्त अधारा ४
५ जय त्रिवेणी स्वर्ग नसेनी सुख देनी मंगल करणी ।

भरद्वाज मुनिवर तप के हित । रहत निकट तेरे शरणी १
जब जब होत मकर को उत्सव । आवत सुर संग ले निज घरणी
मज्जन पान पाप सब मोचन । शोक मोह दारुण अघ हरणी २
जो न गयो तेरे शरणागति । का करणी कीन्ही नर धरणी
तेरी महिमा को पार न पावत । निगम पुराण गुणाकर बरणी ३
हर्ष वरदान मातु मोहि दीजे । करो कृपा जनपर जग तरणी
दर्श पर्श माधव जी अखैवट । लाल मनी मांगत येहि करणी ४

६ श्री पति चरण कमल धरु ध्यान

पद सरोज सुन्दर मन भावन । शोक मोह अघ पुंज नसावन
पर्शि जासु बलि भये जग पावन । आवत सुमिरन ज्ञान १
छुवत जासु गौतम ऋषि नारी । मन हर्षित पति लोक सिधारी
भई परम पद की अधिकारी । गावत वेद पुराण २
जे पद ते प्रगटी सुर सरिता । परम पुनीत मनोहर चरिता।
त्रिविध ताप कलि मल सब हरिता । पावत मंजन पान ३
सहसानन चतुरानन ध्यावें । खोजत फिरत अन्त नहिं पावें
सुर मुनि सिद्ध समाध लगावें । ध्यावत शम्भु सुजान ४
लाल मनी की विनय सुनि लीजे । अघ अवगुण मेरे चित्त न कीजे
दीन जानि प्रभु अब मोहि दीजे । भावत मन बर दान ५

७ श्री पति चरण सरोज नमामी

व्यापक ब्रह्म चराचर नायक । अविनाशी सब अंतर्यामी
चरण सुहावन सुर मुनि भावन । सुमिरत सुलभ मुक्ति अभिरामी २
रवि शशि पवन गगन युत तारे । भृकुटि बिलोकि दिवस निशि गामी ३
लाल मनी पर कृपा करो प्रभु । पुरवौ मोर मनोरथ स्वामी ४

८ नमो २ जय कमला कान्त ॥

शिव विरंच मुनि ध्यान लगावत। पावत शेष न अन्नं १
त्रिभुवन स्वामी अंतर यामी । गावत कवि गुण वन्नं २
जन रञ्जन भर्णतारत भञ्जन। कहत विबुध श्रुत सन्नं ३
लाल मनी बलि जाउं चरणकी । आरत हरण श्री भगवन्नं ४

९ नमो नमो जय श्री रघुवंश

नमो अवध वासी नृप दशरथ। जासु सुरेश करत पर संश १
नमो कोशिल्या आदि सब माता। पार ब्रह्म भये जहां शिशु अंश २
नमो भरत जय नमो रिपुसूदन। नमो लषण भूषण कुल हंश ३
नमो नमो सरयू जल पावन। पर्श जाहि त्रिय ताप विधंश ४
लाल मनी भजु सिया रघुनंदन। भंजन दुख दारुण भव संश ५

१० जय रघुवंश अवध पुरवासी

भूप शिरोमणि भये नृप दशरथ। भानु समान तेज पर काशी
प्रगटे तासु भवन धरि शिशु तन। अलख रूप अविगत अविनाशी १
खोजत फिरत मर्म नहिं पावत। शिव विरंच सुर मुनि सन्यासी
तेहि कोशिल्या गोद खिलावति। धन्य सुकृत धन २ सुख राशी २
जाके चरण कमल सुमिरे ते ॰ । कटत सब कोटि जन्म अघ फांसी
सोइ रघुनाथ अजिर दशरथके। विचरति तन धरि भक्त बिलासी ३
लाल मनी को यह बर दीजे । मन क्रम बचन जो मम उर भासी
करो कृपा निध दास आपनो। श्री पति पुर बैकुण्ठ निवासी ४

११ भजु मन रघुपति अवध बिहारी

सुर मुनि जाहि ध्यान धरि ध्यावत। सहित सनेह उमा मद नारी
जन रंजन खल असुर निकंदन। विश्व भरण सन्तन सुखकारी १
शीश मुकट कुंडल छबि कानन। कोटि मनोज लजावन हारी
नासा सुभग मनोहर आनन। सोहत केशर तिलक लिलारी २

अरुण नयन चितवन मनभावन। मोहे मधुप खग मृगजल चारी
कंठ माल गज मुक्ता छाजत ।जनु दुति उरगण नभ उजियारी ३
कर सरोज शर धनुष विराजत। बाहु विशाल अतुल बल भारी
लाल मनी छबि का मैं बरणों। नख दुति चरण कमल बलिहारी ४

२२ जय रघुनाथ शरण तेरी सांची।

दीन बंधु प्रणतारत भंजन + ।यामें कछुक न तनक असांची
शरण आय जिन जिन गति पाई। कहौं सो सत्य रेख महि खांची १
जहर अमृत सम मीरा चाखेउ ।काल कूट दुस्तर से बांची
सुर दुर्लभ गति गणिका पाई ।जब राम शरणागति सुंदर नाची २
जरत अनल प्रह्लाद बचायो। लागेउ तन में तनक न आंची
तजि मद मोह जो हरि पद ध्यायो। कीरत बिमल चहूं दिश माची
अस प्रभु छोड़ि भजत जे आने। ते नर जड़ खल अधम पिशाची
लालमनी चेरो उन हिन को ।जे प्रभु चरण रहत नित राची ४

२३ दीन जन की सांची सरकार

जब प्रह्लाद भक्त को बांध्यो ।हिरण कशिपु सुरार +
प्रणत पाल अपने जन के हित। निकसे खंभा फार १
दीन बचन गजराज पुकार्यो। ग्रसत ग्रह जल धार +
सुनिके टेर प्रभु आतुर आये। गहि कर लीन्ह उबार २
जब २ कष्ट परत सुर सन्तन ।तब तब धरि अवतार +
असुर मारि महि भार उतार्यो। करुणा सिंधु खरारि ३
शिव चतुरानन ध्यान धरत नित। शेष न पावत पार +
सोइ सरकार लाल मनी पर। हेरो नजर निहार + ४

२४ लागत भवन बिना हरि फीको

जे ग्रह राम नाम नहिं अंकन ।लहत न शोभा कोट अमी को १

रसना वही जो हरि जश गावै । नहीं तो दादुरस्वान सरीको २
जिनके रसना राम भजन नित । सुर दुर्लभ पावन गति नीको ३
लालमनी चेरो उनहीं को । जिन के ध्यान रहत पिय सीको ४

२५ मेरेतो राम भरोसो सांचो

सुनु मन मूढ़ वृथा तू सोचत । मैं जाके रंग राचो *
अलख रूप निर्वाण सोई है । ताके शर्ण मैं जांचो ॥ १ ॥
करि विश्वास आस सब परहर । अरन कबंध जव माचो *
समर मांझ मरुही के अखाड़ा । टूट घराट गज बांचो ॥ २ ॥
लाल मनी समुझो मन अपने । यह तनको घट काचो *
अस विचार सब लाज छोड़िके । आय शर्ण प्रभु नाचो ३

२६ प्रभुकी रीझ बूझ कछु न्यारी

कानप कीन्ह अजामिल सदना । का गौतम ऋषि नारी *
ते तन तजि सुरलोक सिधारे । भये परम पद के अधिकारी १
गणिका अधम कुजाति नीच मति । काह कीन्ह तप भारी
ऐस सरल सुभाय दयानिधि । सुवा पढ़ावत तारी । २ ।
नहिं रीझत प्रभु जोग जाप तप । नहिं पूजा विस्तारी *
केवल विनय प्रेम वस रीझत । प्रणत पाल सुख कारी ३
लाल मनी देखो तजि मोहे । प्रभु सम को हित कारी *
विन सेवा जो द्रवत दीन पर । भक्त वत्सल भय हारी ४

२७ प्रभुकी लखि न जात प्रभुताई

क्षणमा चहत सरवोर करत छिन । क्षणमा रव हू उड़ाई *
छणमा रावते रंक बनावत । क्षणमा रंके राज बढ़ाई १
अद्भुत गति करुणा निधि तेरी । अगर सो देत दिखाई
बरसत मेह सूखत तरु शाखा । विन वर्षा हरिआई २

अलख रूप जग जोति विराजत। सुनो सुजन चित लाई +
लालमनी बिन कृपा राम के। लखै न काहू पाई ॥ ३ ॥

१८ केहि विध तारोगे रघुराई

नहिं सदना नहिं गीध अजामिल। जिनकी गति तुम नाथ बनाई
पापी अधम सुपापी हौं मैं। सत्य कहौं करि राम दोहाई १
नहिं तीरथ नहिं ध्यान जोग जप। नहिं जानौं कछु भजन उपाई
नहिं व्रत दान न देवल पूजा। तुमसों कछु नहिं नाथ दुराई। २।
नहिं गुरु भक्त न साधु की संगत। नहिं है विप्र चरण सवकाई।
केहि विध नाथ मोहि अपनैहो। सो मारग हमें देव बताई। ३।
अधम उधारन तुम करुणा निधि। चारों वेद पुराणन गाई।
सो भरोस नाथ मोहिं येही। लालमनी पर होउ सहाई ४

१९ केहि विधि नाथ मोहिं अपनैहो

मोसम कुटिल कुचालि दया निधि। तीन लोक खोजे नहिं पैहो
चढ़ो पाप बोहित में निशि दिन। फिर कैसे के पार लगैहो +१
नहिं शिवरी सम प्रीत अलौकिक। जो उच्छिष्ट ताके फल खैहो ३
सांची बिनय कहों कर जोरे। कौन भांत मोहि तुम पति यैहो २
लालमनी विश्वास आस एही। अपनी वोर निबैहो +
मेटोगे अपराध जो मेरे। अधम उधार कहैहो। ३।

२० प्रभु केहि विध मोहि तुम तारिहो

पाप करत निशि वासर बीतत। पर त्रियाडटत मनो ऋण जीतत
आठो जाम कुमारग ढूंढत। मोहि तन काहे को निहारि हो १
नर तन पाय न कछु को रीन्हो। नहिं जप जोग न तीरथ कीन्हो
विषय भोग में नित चित दीन्हो। कैसे के फिर उधारि हो २
अधम उधारन तुम करुणाकर। गावत वेद पुराण गुणाकर

सांची प्रतीत एक एही उर धर। अवगुण सबै बिसारिहौ ३
गुण अवगुण मेरे कछु न विचारो। नाथ तुम अपनी वोर निहारो
लाल मनी के जो अघ तारो । बसुधा भार उतारि हौ ४
२१ तारे पतित बहुत करुणानिधि मो सम पतिन कहूं नहिं तारे
जे तारे ते काहु न तारे ✢ । तारे तो भूतल भार उतारे १
गिनती तिन की कहां लौं कहिये। तारे तो एते गंगन न हीं तारे २
धन्य भाग बड़ि उन पतितन की प्रभु। तारे तिन्हे भव सिंधु उतारे ३
तिन पतितन को काह सराहिये। भये त्रिलोक उदै जाके तारे ४
लाल मनी की बिनै प्रभु येही। तार बनै न बनै विन तारे ५
२२ जो तुम नाथ दीन अपनायो। तब तो दीन दयाल कहायो
रंक ते राव सुदामहि कीन्हेउ। रत्न मणिन जरि महल बनायो
ध्रु को अटल बड़ाई दीन्हेउ । लंका राज विभीषण पायो १
रूप अनूप दियो कुवजा को । जल बूडत गजराज बचायो।
परम भक्ति शिवरी को दीन्ही। जूंठ फल रुच भोग लगायो २
हौ उदार सुखसार दयानिधि। चारो वेद पुराणन गायो
दीन बंधु प्रण रन भंजन । मेरी बेर कस बेर लगायो ३
धनिध कहाय भयो मोहि कृपिन। वह उदारता कहां गवांयो
कहा गरज घन घोर कियो तो। चातक चंच जो नीर न नायो।४
लाल मनी मांगत कर जोरे । जन अनाथ को जग न हं सायो
हौ निर्द्धन के धन तुम स्वामी। राखो लाज शरण तक आयो ५
२३ जिनका राम भुजन पर राखे
का काहू के अनुकूल पाते ✢ । का काहू के मारवे ॥ १ ॥
राम प्रताप सुमिर मन मीरा । बिष अम्रत सम चाखे २
हित प्रह्लाद रूप धरि नरहर। कवि कोविद गुण भाखे ३

लाल मनी पद पंकज सुमिरत। पूजत मन अभिलाखे ४

२४ सुनियत नाथ तुम्हें अघहारी

भये प्रचण्ड असुर जे यह जग। सुर रिपु ऋषि मुनि मनुज अहारी
तिन्हें मारि निज धाम पठायो। तुम सम को अस अधम उधारी १
अजामील इक पापी ब्राह्मण। नित प्रति कर्म धर्म विधिचारी
मरन काल सुत नाम पुकार्यो। चढ़ि विमान सुर सदन सिधारी २
गौतम श्राप कोप जब दीन्हो। भई सो शिघ्र शिला ऋषि नारी
परस न रज पद कमल तुम्हारे। गई पति लोक त्याग अघ भारी ३
अधम उधारन तुम करुणाकर। विदित पुराण निगम श्रुत चारी
लाल मनी सुनि तुम्हें अघमोचन। आयो शरण सुख सिंधु विहारी ४

२५ रसना राम भूल कस जाती

आठ पहर बातन मा खोयो। रहत विषै रस माती १
परनिन्दा को आलस नाहीं। राम कहत अलसाती २
जो रसना न राम गुण गावै। मानो स्वान संगाती ३
अस विचार सुनु मोर सिखापन। राम भजो दिन राती ४
लाल मनी बिन भजन राम के। नहिं तन तपत बुझाती ५

शिव अष्टक

करकपालं शूलडमरू भालशशिनेत्र लोचनं
मुंड मालं गल विराजत पंच शर मद मोचनं।
गिरजा रमण निर्वाण रूपं व्याल भूषण शंकरं
१ कैलाश पति वरदायकं कृपायतन गौरी वरं
योगेश्वरं चर्म वाससं सुरसर जटं वृषभ ध्वजं
त्रिविष्टपेश्वर काशिधीशं विश्वपति पद पंकजं
विकट नेत्र विरोचनं अहि भूषणं दिग वस्त्रं ॥

२ कैलाश पति वरदायकं कृपाय तन गौरी वरं।
मसानभस्म विलेपनं शशिमस्तकं अखिलेश्वरं
गरल अशनं धूर्जटं भव भंजनं विश्वेश्वरं। ✣।
विश्वंभरं वरदायकं शिवजूट मय गंगा धरं
३ कैलाश पति वरदायकं कृपाय तन गौरी वरं
नृगुण रूपं पशु पतिं अज गवधरं रामेश्वरं।
मदन दहनं गिर पतिं गिरधी वरं वामेश्वरं। ✣।
सित कंठ व्याली विष धरं नग्नाय तन दिग वरं
४ कैलाश पति वरदायकं कृपाय तन गौरी वरं
शुभ ललाटं पंच वक्र भुजग धर नागेश्वरं।
रुचिर नेत्रं नील कंठं परशु धर नागेश्वरं।
भुज विशालं गौर रूपं मृत्युंजय अस्मर हरं
५ कैलाश पति वरदायकं कृपाय तन गौरी वरं
ॐकार रूपं शशि धरं भुवनेश्वरं वृष भासनं
वेदशासनं अज अनीश भव पति कमलासनं
ब्रह्म व्यापकं प्रथमाधिपं सर्म दायकं पंचाक्षरं
६ कैलाश पति वरदायकं कृपाय तन गौरी वरं।
त्रिभुवन पतिं व्याघ्राम्बरं त्रिपुरांतकं सोमेश्वरं
चन्द्र शेखरं वृष वाहनं नरकान्तकं भीमेश्वरं
सकल जीवन पालकं सर्व भूत दमनेश्वरं।
७ कैलाश पति वरदायकं कृपाय तन गौरी वरं।
ब्रह्मांड नायक निर्गुणं धर्मदेश्वरं हर्म दायकं
शरणागतं आरत हरं नर्मदेश्वर भव नायकं

विचित्र रूप विराजतं अघनाशनं परमेश्वरं ।
८ कैलाश पति वर दायकं कृपाय तन गौरी वरं ।
लाल मनी पद पंकजं सुर सेविनं नित वंदितं
फल अक्षतं घृत धूप दीप पुष्प पत्र पूजितं ।
सम्पूर्ण शिव अष्टकं मुक्त दायकं भद मंगलं ।
मन कर्म वच जे पाठतं ते प्राप्त शुभ श्वर थलं

सम्पूर्णम्

विष्णु अष्टक

हरि मुकुंदं वासुदेवं केशवं विभु माधवं । ॐ ।
निर्गुणं गुण कारणं भक्त वत्सलं श्री राघवं
त्रिविक्रमं श्री वल्लभं दामोदरं जल शायनं ।
१ भज गोविंदं अच्युतं कमला पतिं नारायणं ।
नरोत्तमं गरुड़ ध्वजं विष्णु गोपालं भूधरं ॐ
गोपतिं अव्यक्त रूपं शोरि श्री पति गिरिधरं ।
गोपी पतिं देवकी सुतं पीतांबरं श्री वामनं ।
२ भज गोविंदं अच्युतं कमला पतिं नारायणं ।
व्रजर नाहं मोक्ष पात्रं ज्योति रूपं नटवरं ।
वेदांगं करुणा करं व्यक्त रूपं रघुवरं ।
निरंजनं ज्योगे श्वरं इन्द्रा वरं जग वंदनं ।
३ भज गोविंदं अच्युतं कमला पतिं नारायणं
चक्र पाणं पद्म नाभं भव पतिं नरकान्तकं
अज अनीशं लक्ष्मीशं भगवतं ब्रह्म व्यापकं
निराकारं गुणातीतं नरवरं श्वर भूषणं ।

४ भज गोविंदं अच्युतं कमला पतिं नारायणं
रमा नाथं राम चन्द्रं रघुपतं परमेश्वरं ।+
गोपी नाथं कृस्न चन्द्रं जदु पतिं प्रभु ईश्वरं
श्री धरं पुरुषोत्तमं विश्वेश्वरं मुर मर्दनं +
५ भज गोविन्दं अच्युतं कमला पतिं नारायणं
जन्नं वैकुण्ठं हृषी केशं विश्व रूपं नरहरं
माया पतिं गोपेश्वरं मुचि मर्दनं सीता वरं
श्री कान्तं रघुनंदनं गोपी प्रियं मद सूदनं ।
६ भज गोविंदं अच्युतं कमला पतिं नारायणं
त्रगुण रूपं चिदानंदं मा प्रियं अघ मोचनं
नीलांगं पद अम्बुजं राजीव आयत लोचनं
श्रीसं अनन्तं सर्व नाथं सर्वदा सुर रंजनं ।
७ भज गोविन्दं अच्युतं कमला पतिं नारायणं
लाल मनी विस्नु अष्टकं सम्पूर्ण सुख दायकं
जन्मांत्र भय भंजनं । सीता पतिं रघुनायकं
हरि चरित्रं सुख पवित्रं प्रात काले गायणं ।
८ भज गोविंदं अच्युतं कमला पतिं नारायणं

सम्पूर्ण

लि॰ पूर्ण चन्द्र गौड़ शर्म्मा